परे है और साथ ही उनका स्वामी भी है।।१५।।

तात्पर्य

जीवों की सम्पूर्ण इन्द्रियों के मूल होने पर भी परमेश्वर उनके समान प्राकृत इन्द्रियों से युक्त नहीं हैं। वास्तव में तो जीव की इन्द्रियाँ भी अप्राकृत हैं। किन्तु बद्धावस्था में वे प्राकृत तत्त्वों से ढक गई हैं और इसी कारण इन्द्रिय-क्रियाओं की अभिव्यक्ति जड़ प्रकृति के द्वारा होती है। श्रीभगवान् की इन्द्रियाँ इस प्रकार कभी आवृत नहीं होतीं। उनकी इन्द्रियाँ सर्वथा अप्राकृत हैं; इसीलिए वे 'निर्गुण' कहलाते हैं। 'गुण' का अर्थ माया के त्रिविधगुणों से है। श्रीभगवान् की इन्द्रियाँ मायिक आवरण से मुक्त हैं, अतएव वे निर्गुण हैं। यह भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि उनकी इन्द्रियाँ हमारी इन्द्रियों के समान नहीं हैं। हमारी सम्पूर्ण इन्द्रिय-क्रियाओं के होते हुए भी वे स्वयं दिव्य शुद्ध इन्द्रियों से युक्त हैं। श्वेताश्वतरोपनिषद् के **सर्वतः पाणिपादम्** श्लोक में इस तथ्य का अतिशय सुन्दर प्रतिपादन है। श्रीभगवान् के हाथ ऐसे नहीं हैं, जो माया-दूषित हों। वरन्, उनके अपने विशिष्ट दिव्य हाथ हैं, जिनसे वे सब समर्पण स्वीकार कर लेते हैं। बद्धजीव और परमात्मा में यही भेद है। श्रीभगवान् की प्राकृत आँखें नहीं हैं, पर साथ ही दिव्य नेत्र हैं; अन्यथा वे देखते कैसे? उनकी इन्द्रियाँ साधारण नहीं हैं—वे सबके साक्षी, त्रिकालज्ञ और सर्वज्ञ हैं। जीव के हृदय में बैठे हुए वे हमारे भूत, वर्तमान तथा भविष्य के भी सभी कर्मों को जानते हैं। श्रीभगवद्गीता में अन्यत्र भी कथन है: 'वे सब कुछ जानते हैं, पर उनके तत्त्व को कोई नहीं जानता।'' कहा जाता है कि श्रीपरमेश्वर के हमारे जैसे चरण नहीं हैं। अप्राकृत चरणों से युक्त होने के कारण वे सम्पूर्ण अन्तरिक्ष का भ्रमण कर सकते हैं। भाव यह है कि परमेश्वर निर्विशेष-निराकार नहीं हैं। उनके अपने विलक्षण नेत्र, चरण, हाथ आदि हैं। हम श्रीभगवान् के भिन्न-अंश हैं, इसलिए हम भी इन अंगों से युक्त हैं। परन्तु श्रीभगवान् में यह विशेषता है कि उनकी इन्द्रियों को प्रकृति (माया) कभी स्पर्श नहीं कर सकती।

श्रीभगवद्गीता में प्रमाण है कि श्रीभगवान् सदा अपनी योगमाया के द्वारा ही अवतरित होते हैं। वे त्रिगुणमयी माया के स्वामी हैं, अतः उससे दूषित नहीं होते। वैदिक शास्त्रों के अनुसार उनका स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। वे सच्चिदानन्दविग्रह हैं। सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से युक्त हैं तथा सम्पूर्ण श्री और शक्ति के अधीश्वर, परम बुद्धिमान् और ज्ञानमय हैं। ये श्रीभगवान् के कुछ लक्षण हैं। वे ही सम्पूर्ण जीवों के पालनकर्ता और कर्मों के साक्षी हैं। जहाँ तक वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है, श्रीभगवान् नित्य मायातीत दिव्य पुरुष हैं। यद्यपि हमें उनके मुख, नेत्र, हाथ, पैर, आदि का दर्शन नहीं होता, परन्तु यह सत्य है कि वे इन अंगों से युक्त हैं। शुद्धसत्त्व में आरूढ़ हो जाने पर ही भगवत्‌रूप का दर्शन हो सकता है। वर्तमान में हमारी इन्द्रियाँ माया से दूषित हैं; इसलिए उनके रूप का दर्शन नहीं हो रहा है। यही कारण है कि मायाबद्ध निर्विशेषवादी श्रीभगवान् के तत्त्व को हृदयंगम नहीं कर पाते।